10.07.2020
Nag Panchmi
11.07.2020

बी० ए०- खण्ड - I
अर्थशास्त्र (सम्मान)
द्वितीय पत्र.
मुद्रास्फीति (Inflation)

डॉ० विपिन कुमार
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग
आर० आर० एस० कॉलेज, मोकामा
पी० पी० यू० पटना

प्रश्न : मुद्रास्फीति क्या है? इसके प्रमुख कारणों को बतायें?

उत्तर : अर्थशास्त्र की भाषा में मुद्रास्फीति (Inflation) को सामान्य बोलचाल की भाषा में मंहगाई भी कहा जाता है। मुद्रास्फीति अर्थात 'मंहगाई' से तात्पर्य उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की मूल्य में वृद्धि होना है। जब उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में स्थायी या अस्थायी वृद्धि हो तो उसे "मुद्रास्फीति" या 'मंहगाई' कहा जाता है।" उदाहरणस्वरूप, मान लिया जाय कि आज मुद्रास्फीति की दर 10 प्र. श. है तो इसका सीधा सा अर्थ यह हुआ कि एक साल पूर्व ~~जो वस्तु~~ जिस वस्तु की कीमत 100 रु० थी -- आज वही वस्तु (उस वस्तु की कीमत) 110 रु० हो गयी है। अर्थात 'मुद्रास्फीति' या 'मंहगाई' पैसे की कीमत में इसी गिरावट को कहा जाता है।

दूसरे शब्दों में, "जब माँग और पूर्ति में असंतुलन पैदा हो जाता है तो वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें बढ़ जाती हैं। कीमतों में इस वृद्धि को ही 'मुद्रास्फीति' कहा जाता है। भारत में मुद्रास्फीति की गणना दो मुख्य सूचियों के आधार पर किया जाता है। प्रथमतया, थोक मूल्य सूचकांक (Wholesale Price Index (WPI) एवं उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (Consumer Price Index (CPI). देश में अत्यधिक मुद्रास्फीति की दर हानिकारक होती है जबकि 2-3 प्र. श. मुद्रास्फीति की दर अर्थव्यवस्था के लिए सही मानी गयी है,

मुद्रास्फीति मुख्यतया, दो कारणों (प्रकार) से उत्पन्न होती है:

(i) मांगजनित (कारक) मुद्रास्फीति (Demand Pull (Factor) Inflation): यदि मांग के बढ़ने से वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होती है तो वह मांगजनित मुद्रास्फीति (Demand-Pull Inflation) कहलाती है।

(ii) लागत जनित (कारक) मुद्रास्फीति : (Cost-Push Inflation): अगर उत्पादन के कारकों यथा (भूमि, पूंजी, श्रम, कच्चा माल) इत्यादि की लागत में वृद्धि से वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि होती है तो वह लागत जनित मुद्रास्फीति (Cost-Push Inflation) कहलाती है।

मुद्रास्फीति के निम्नलिखित अन्य प्रमुख कारण (कारक) बतलाये गये हैं:

(i) मांग जनित या मांग-प्रेरित-स्फीति (Demand Pull Inflation): यह तब उत्पन्न होती है जब अर्थव्यवस्था में वस्तुओं एवं सेवाओं की कुल मांग, अर्थव्यवस्था की उत्पादन क्षमता की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ती है।

(ii) जैसे गैर-सरकारी योजना व्यय से अर्थव्यवस्था में धन की पूर्ति बढ़ जाती है -- जिससे मांग में वृद्धि हो जाती है।

(iii) सरकारी घाटे के बजट की आपूर्ति के लिए सरकार अतिरिक्त करेंसी छापती है -- जो मुद्रास्फीति या आपूर्ति दोनों में ही वृद्धि करती है।

लागत-प्रेरित-स्फीति : (Cost-Push-Inflation) : यह मूलतः लागत वृद्धि अथवा वस्तुओं या सेवाओं की आपूर्ति में कमी से उत्पन्न होती है।

(i) उत्पादन आपूर्ति में उतार-चढ़ाव, जो मांग के अनुरूप नहीं हो पाती या प्राप्त उत्पादन को मुनाफाखोर जमाकर के ऊँचे कीमत (लाभ) पर बेचते हैं।

(ii) अप्रत्यक्ष कर में वृद्धि होने से भी वस्तु के मूल्य में वृद्धि हो जाती है।

(iii) कुछ ऐसी भी सरकारी योजनायें होती हैं जिसमें आम आदमी को छूट (subsidy) दी जाती है। कई बार तो कई तरह के कर्ज भी माफ कर दिये जाते हैं -- जो मुद्रा-स्फीति को बढ़ाने में सहायक साबित होते हैं।

(iv) मौद्रिक नीति के कारण मुद्रा स्फीति : जब देश की केन्द्रीय बैंक ब्याज दरों में कटौती करते हैं तो वस्तु एवं सेवाओं की माँग में वृद्धि होती है, जो मंहगाई को बढ़ाने में सहायक साबित होता है।

| | |
|---|---|
| (1) मांग जनित या मांग प्रेरित स्फीति के कारण (Demand Pull inflation) | (2) लागत-(जनित)-प्रेरित स्फीति के कारण (Cost Push Inflation) |
| (i) विनिमय दर का मूल्य ह्रास. | (i) बढ़ती श्रम लागत. |
| (ii) राजकोषीय प्रोत्साहन से अधिक मांग. | (ii) मंहगाई की उम्मीद. |
| (iii) अर्थव्यवस्था को मौद्रिक प्रोत्साहन. | (iii) उच्च अप्रत्यक्ष दर. |
| (iv) अन्य देशों में तेजी से विकास | (iv) विनिमय दर में गिरावट |
| | (v) एकाधिकारियों का / लाभ-धक्का-स्फीति |
| | (vi) कच्चे माल और अन्य घटकों की कीमतों में वृद्धि. |

उपरोक्त विवेचन में मुद्रा-स्फीति परिभाषा एवं प्रमुख कारणों का वर्णन किया गया है।

अगली कक्षा में मुद्रा-स्फीति का देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों एवं उसके निराकरण के उपाय की चर्चा की जाएगी।